लौहतुला

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» भावलक्षण: सति सप्तमी (भावे सप्तमी)

प्रश्न 1 (आसान). निम्नलिखित वाक्य में 'सति सप्तमी' वाले पद को पहचानो: 'सूर्य अस्तं गते, सर्वे बालकाः गृहं गच्छन्ति।'
उत्तर – सूर्य अस्तं गते

प्रश्न 2 (आसान). क्या 'शिक्षकस्य आगमने, छात्राः तुष्णीं भवन्ति' वाक्य में 'सति सप्तमी' का प्रयोग है?
उत्तर – हाँ

प्रश्न 3 (मध्यम). वाक्य 'नृत्यति शिवे नृत्यन्ति शिवगणाः' का अर्थ बताओ और 'सति सप्तमी' कहाँ है, समझाओ।
उत्तर – अर्थ: 'जब शिव नाचते हैं, तो शिवगण भी नाचते हैं।' 'शिवे' में 'सति सप्तमी' है क्योंकि शिव के नाचने से शिवगणों के नाचने का ज्ञान होता है।

प्रश्न 4 (कठिन). 'हठमाचरति बाले भ्रमरः अगायत्।' इस वाक्य का 'सति सप्तमी' के नियम के अनुसार हिंदी अर्थ बताओ।
उत्तर – जब बच्चे हठ करते हैं (जिद करते हैं), तब भौंरा गाने लगा। (बच्चे के हठ करने की क्रिया से भौंरे के गाने की क्रिया का ज्ञान होता है, इसलिए 'बाले' में सप्तमी है।)

» बहुव्रीहि समास: अन्यपदार्थप्रधनो

प्रश्न 5 (आसान). अनुचिन्तिताः पूर्वदिनस्य पाठाः यैः ते - इस विग्रह का समस्त पद क्या होगा?
उत्तर – अनुचिन्तितपूर्वदिनपाठाः

प्रश्न 6 (आसान). विघ्नितः मनोरथः यस्य सः - इसका समस्त पद क्या है?
उत्तर – विघ्नितमनोरथः

प्रश्न 7 (मध्यम). चतुर्भुजः का विग्रह कीजिए और समास का नाम बताइए।
उत्तर – चत्वारि भुजाः यस्य सः (विष्णुः) - बहुव्रीहि समास।

प्रश्न 8 (कठिन). नीलकण्ठः का विग्रह करके बहुव्रीहि समास का नियम स्पष्ट करें।
उत्तर – नीलः कण्ठः यस्य सः (शिवः)। यहाँ 'नीला' और 'कंठ' दोनों मिलकर किसी 'तीसरे' पद, यानी भगवान शिव, का बोध करा रहे हैं। यही 'अन्यपदार्थप्रधनो बहुव्रीहि' का नियम है।

» कथा का सार और घटनाक्रम (लौहतुला)

प्रश्न 9 (आसान). लौहतुला में 'मूषक-भक्षिता' विवाद किस बात पर है?
उत्तर – तराजू का चूहों द्वारा खा लिया जाना–'तराजू चूहे खा गये हैं' पर।

प्रश्न 10 (आसान). जीर्णधन पुत्र को कहाँ छिपा देता है?
उत्तर – स्नान-बहाने नदी तट ले जाकर गुफा में।

प्रश्न 11 (मध्यम). न्यायालय तक बात कैसे पहुँची? (क्रम लिखो)
उत्तर – धोहर की माँग 'मूषक-भक्षिता' का विवाद पुत्र छिपाना और झूठ बोलना दोनों पक्ष न्यायालय पहुँचकर समुचित न्याय की मांग करते हैं।

प्रश्न 12 (कठिन). कथानक के आधार पर सार लिखते समय सबसे पहले किन 2 बातों को जरूर शामिल करना चाहिए?
उत्तर – मुख्य पात्र/स्थिति (जीर्णध्न की धोहर की मांग) और विवाद का मुद्दा (तराजू के चूहों द्वारा खा जाने वाला आरोप)।

» शब्दार्थ/पद-प्रयोग द्वारा अर्थग्रहण

प्रश्न 13 (आसान). 'ईदृशः' का अर्थ क्या है?
उत्तर – ऐसा ही / Like this

प्रश्न 14 (आसान). 'एनम्' किसके लिए आता है?
उत्तर – इसे / एतत् (इसे वाला)

प्रश्न 15 (मध्यम). 'निक्षेपः' और 'धोहर' का सामान्य अर्थ क्या है?
उत्तर – Deposit/न्यास–जमा की हुई वस्तु

प्रश्न 16 (कठिन). किस प्रकार की जानकारी देने में 'ईदृशः/एतादृशः' शब्द तुम्हें मदद करते हैं?
उत्तर – 'कीदृशी?' जैसे प्रश्नों में प्रकार/जैसा वैसा–ऐसी ही बात बताने में

» अभ्यास-आधारित प्रश्नोत्तर (संस्कृत में)

प्रश्न 17 (आसान). जीर्णध्नः किम् व्यचिन्तयत्?
उत्तर – जीर्णध्नः देशान्तरं गन्तुम् व्यचिन्तयत्।

प्रश्न 18 (आसान). श्रेष्ठिनः शिशुः स्नानोपकरणम् आदाय के सह प्रस्थितः?
उत्तर – श्रेष्ठिनः शिशुः स्नानोपकरणमादाय अभ्यागतेन सह प्रस्थितः।

प्रश्न 19 (मध्यम). धर्म-अधिकारिणः जीर्णध्नश्रेष्ठिनौ कथं तोषितवन्तः?
उत्तर – धर्म-अधिकारिणः सभ्यैः तयोः परस्परं संबोध्य तुला-शिशु-प्रदानेन सन्तोषितवन्तः।

प्रश्न 20 (कठिन). जीर्णध्नः गिरिगुहां कया आच्छादितवान्? (पात्र की क्रिया के साथ संस्कृत वाक्य बनाओ)
उत्तर – जीर्णध्नः गिरिगुहां बृहच्छिलया आच्छादितवान्।

» सन्धि/विभक्ति-निर्देश व रिक्तस्थान पूर्ति (व्याकरण-अनुप्रयोग)

प्रश्न 21 (आसान). वाक्य: "उपकरणम् $ ____ आह" – रिक्तस्थान में कौन-सा रूप भरना सही होगा ताकि "उपकरणम्" से 'किसका/किसके' सम्बन्ध बने? (साथ में निर्देश मानो: षष्ठी नास्ति)
उत्तर – यहाँ 'उपकरणम्' के लिए निर्देश देखकर ऐसा रूप लिखो जो षष्ठी/द्वितीया न दे; सामान्यतः 'तस्य/तदर्थम्' जैसे समुचित सम्बन्ध वाले रूप चुने जाते हैं–निर्देशानुसार तृतीया/उपपद-प्रयोग अपनाओ।

प्रश्न 22 (आसान). यदि निर्देश दे "ल्यप् प्रत्ययः नास्ति", तो रिक्तस्थान में कौन-सा गलत प्रत्यय नहीं लगाना है?
उत्तर – ल्यप् प्रत्यय (ल्यप्/ल्-प्रत्यय जैसा कृदन्त) नहीं लगाना है।

प्रश्न 23 (मध्यम). "सन्धिना/विच्छेदेन" पूछा गया है। अगर जोड़ा हुआ रूप मिले, तो उत्तर में क्या लिखना होगा?
उत्तर – जोड़ा हुआ रूप को तोड़कर पदों का विच्छेद लिखना होगा (या निर्देश के अनुसार सन्धि करके संयुक्त रूप लिखना होगा)।

प्रश्न 24 (कठिन). वाक्य में रिक्तस्थान है और साथ में लिखा है "द्वितीया/षष्ठी विभक्ति नास्ति"। तुम 'अर्थम्' वाले अर्थ (लिए/हेतु) में कौन-सी दिशा में नहीं जाओगे?
उत्तर – तुम "द्वितीया" या "षष्ठी" वाले रूपों जैसे 'स्नानम्' (द्वितीया) या 'स्नानस्य' (षष्ठी) की तरफ नहीं जाओगे; निर्देश के अनुसार उसी विभक्ति से अलग व्यवस्था अपनाओगे।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. वाक्य में 'सति सप्तमी' पहचानो और अर्थ समझाओ: 'गर्जति मेघे मयूरः अनृत्यत्।'

› पहले वाक्य के दो भाग अलग करते हैं: 'गर्जति मेघे' और 'मयूरः अनृत्यत्' ।

› 'गर्जति मेघे' मतलब 'बादलों के गरजने पर' या 'जब बादल गरज रहे थे'। यह पहली क्रिया है।

› 'मयूरः अनृत्यत्' मतलब 'मोर नाच उठा'। यह दूसरी क्रिया है।

› क्योंकि बादलों के गरजने से मोर के नाचने का ज्ञान हुआ, इसलिए 'मेघे' (जो मेघ शब्द का सप्तमी रूप है) में 'सति सप्तमी' का प्रयोग हुआ है।

› वाक्य का पूरा अर्थ है: 'जब बादल गरजे, तो मोर नाच उठा।'

उत्तर – 'मेघे' में 'सति सप्तमी' है। अर्थ: 'जब बादल गरजे, तो मोर नाच उठा।'

उदाहरण 2. दत्तदृष्टिः - इसका विग्रह करके बहुव्रीहि समास समझाइए।

› पहला पद है 'दत्त' जिसका अर्थ है 'दी हुई'।

› दूसरा पद है 'दृष्टि' जिसका अर्थ है 'नज़र' या 'आँख'।

› अब अगर हम इसे जोड़ें तो 'दत्तदृष्टिः' का शाब्दिक अर्थ 'दी हुई दृष्टि' होगा।

› लेकिन बहुव्रीहि में यह किसी तीसरे व्यक्ति या वस्तु का बोध कराता है।

› तो इसका विग्रह होगा 'दत्ता दृष्टिः येन सः' - 'जिसके द्वारा दृष्टि दी गई है, वह'।

› यहाँ 'वह' व्यक्ति या वस्तु प्रधान है, न कि 'दी हुई' या 'दृष्टि'।

उत्तर – दत्तदृष्टिः = दत्ता दृष्टिः येन सः (वह जिसके द्वारा दृष्टि दी गई है / जिसने ध्यान से देखा है)।

उदाहरण 3. "लौहतुला" कथा का सार 4-5 वाक्यों में लिखो और घटनाक्रम का क्रम बनाए रखो: धोहर की मांग, 'मूषक-भक्षिता' विवाद, पुत्र को छिपाना, झूठा कथन, न्यायालय का समाधान।

› शुरुआत लिखो–जीर्णध्न विदेश से लौटकर जीर्णध्न का धोहर (लौह-तुला) माँगना

› बताओ–'तराजू चूहे खा गये हैं' वाला आरोप यानी 'मूषक-भक्षिता' विवाद पैदा करना

› क्रम में जोड़ो–जीर्णध्न पुत्र को स्नान-बहाने नदी तट ले जाकर गुफा में छिपा देता है

› फिर लिखो–सेठ के पूछने पर 'पुत्रा को बाज उठा ले गया है' कहना

› अंत में बताओ–दोनों न्यायालय पहुँचते हैं, धर्माधिकारी समुचित न्याय देते हैं

उत्तर – जीर्णध्न विदेश से लौटकर जीर्णध्न के धोहर (लौह-तुला) की माँग करता है। फिर 'तराजू चूहे खा गये हैं'–यानी 'मूषक-भक्षिता'–को लेकर विवाद होता है। विवाद के बीच वह पुत्र को स्नान-बहाने नदी तट ले जाकर गुफा में छिपा देता है। सेठ के पूछने पर जीर्णध्न कहता है कि 'पुत्रा को बाज उठा ले गया है।' अंत में दोनों न्यायालय पहुँचते हैं जहाँ धर्माधिकारी उन्हें समुचित न्याय देकर समाधान कर देते हैं।

उदाहरण 4. 'खद्ध तुला वैफः भक्षिता आसीत्?' वाक्य में 'तुला' के बारे में सही अर्थग्रहण कैसे करोगे? (शब्दार्थ याद करके बताओ कि तराजू का क्या हुआ होगा।)

› पहले मुख्य शब्द पकड़ो: 'तुला' = तराजू (iron balance)।

› फिर कथानक के अनुसार 'भक्षिता' को समझो: यहाँ 'भक्षिता' का अर्थ है 'खा ली गई/भक्षण हो गया'।

› अब 'वैफः' को उस स्थान के संकेत की तरह पढ़ो–कौन-सी तराजू–यानी 'वाली/वह तराजू'।

› इसलिए पूरा अर्थ बनेगा: 'कौन-सी तराजू (वाली) चूहों ने खा ली थी?'–यानी तराजू का 'मूषक-भक्षिता' वाला असर।

उत्तर – इस प्रश्न का अर्थ: 'कौन-सी तराजू चूहों (मूषकों) द्वारा खा ली गई थी?' यानी तराजू भक्षिता/खा ली गई थी।

उदाहरण 5. जीर्णध्नः गिरिगुहाद्वारं कया पिधय गृहमागतः? (कथानुसार उत्तर संस्कृत में लिखो)

› सवाल में 'कया' आया है, यानी 'किस वस्तु/किस साधन से' (कैसे/किससे) द्वार बंद किया।

› कथा में देखो कि गिरिगुहां को ढकने/आच्छादित करने वाली चीज़ क्या बताई है।

› उस साधन को 'कया' के अर्थ में लेकर क्रिया 'पिधय' लगाकर वाक्य बनाओ।

› अंत में 'गृहमागतः' जोड़कर पूरा action-complete वाक्य लिखो।

उत्तर – जीर्णध्नः गिरिगुहाद्वारं बृहच्छिलया पिधय गृहमागतः।

उदाहरण 6. रिक्तस्थान पूर्ति कीजिए: "स्नान $ अर्थम् ____" – निर्देश है कि यहाँ "द्वितीया/षष्ठी विभक्ति नास्ति"। सही रूप लिखो।

› पहले सम्बन्ध समझो: "स्नान के लिए/हेतु" अर्थ चाहिए, इसलिए 'अर्थम्' के साथ उपपद लगेगा।

› निर्देश पढ़ो: "द्वितीया/षष्ठी विभक्ति नास्ति" है, इसलिए तुम "स्नानस्य" (षष्ठी) या "स्नानम्" जैसे द्वितीया रूपों की तरफ नहीं जाओ।

› अब सही उपपद-निर्माण: 'अर्थम्' के साथ सामान्यतः "हेतु/उद्देश्य" भाव बनाने के लिए तृतीया/सम्बन्धित व्यवस्था का प्रयोग किया जाता है; यहाँ 'स्नानाय' भाव आएगा।

› अन्त में वाक्य को जोड़कर सन्धि/उच्चारण-मैचिंग कर दो: "स्नानाय अर्थम् ..." के रूप में लिखो।

उत्तर – स्नानाय अर्थम् (____) – यानी रिक्तस्थान में "स्नानाय" आएगा।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह नियम बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर वाक्यों का अर्थ समझने या विभक्ति पहचानने के लिए पूछा जाता है, इसे ध्यान से दोहराना।

• यह बहुव्रीहि समास बहुत महत्वपूर्ण है और अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में इसके उदाहरण विग्रह या समस्त पद बनाने के लिए आते हैं। विशेषकर 'पीताम्बरः', 'नीलकण्ठः' जैसे उदाहरणों को ध्यान से देखना।

• सार में 3 मुख्य लिंक जरूर लिखो: विवाद का मुद्दा, छिपाना, न्यायालय का निर्णय।

• किसी भी प्रश्न में पहले 'मुख्य शब्द' चिन्हित करो–उसी से सही उत्तर निकलता है।

• उत्तर लिखते समय प्रश्न के 'कया/कथं' को कारक-ढांचे से मैच करोगे तो पूरे अंक पक्के।

• बोर्ड/NCERT में रिक्तस्थान प्रश्नों में निर्देशों को अनदेखा करना सबसे बड़ा कारण है अंक कटने का।

एक नज़र में रिवीज़न

› एक क्रिया से दूसरी का ज्ञान पहली क्रिया के कर्ता में सप्तमी।

› बहुव्रीहि: अन्यपदार्थप्रधनो - दो पद मिलकर तीसरे का अर्थ बताते हैं।

› ध्रोहर चूहे गुफा बाज-झूठ न्याय

› निक्षेप/ध्रोहर=Deposit; ईदृश=ऐसा ही; एनम्=इसे

› - किम्: क्या; कया: किससे; कथं: कैसे–क्रिया वही रखो।

› निर्देश पहले कारक/सम्बन्ध फिर सन्धि